इ. संवर्धन विधि

- जहाँ-जहाँ रोग संक्रमण देखने को मिलता है, वहाँ-वहां गहरी जुताई कर गर्मी के मौसम में धूप पड़ने दें ताकि मृदा में विद्यमान रोगाणु नष्ट हो सके।
- पौधशाला से रोग रहित स्वस्थ क्षेत्रों में रोग संक्रमण होने से बचने हेतु रोग मुक्त क्षेत्रों में पौधा लगाएं।
- पूर्ण रूप से सूख गए पौधों को उखाड़कर जला दें।
- कंपोस्ट/खाद डालकर मृदा में विद्यमान ओर्गेनिक कार्बन की मात्रा बढाएं।
- मृदा सुधार हेतु 800 कि.ग्रा/एकड़/वर्ष की दर से दो विभक्त मात्राओं में नीमतेल की खली का प्रयोग करें।

ई. भौतिक विधि

- **मृदा सौरकरण:** यह मृदा-रोगों और मृदा में विद्यमान खरपतवार, नेमटोड एवं कीटों को नियंत्रित करने की प्रणाली है। मृदा की सतह को प्लास्टिक मल्च शीट से ढक दिया जाता है जिससे कि सूर्य प्रकाश उससे गुज़रकर मृदा को गरम रखता है।

अनुपालन विधि: ▸ 30 से.मी गहराई तक ज़मीन की जुताई करके सिंचाई करें। ▸ प्लास्टिक के किनारों में मिट्टी डालकर 10-15 दिन तक छोड़ दें।

उ. पोषी पादप प्रतिरोध

- वर्तमान शहतूत उपजातियों में, जी-4 उपजाति मूल विगलन रोग के प्रति सहिष्णु है।

रॉट-फिक्स निर्माता

1. **कावेरी एग्रो प्रोडक्ट्स:** प्लाट सं-12, मेटगल्ली इंडस्ट्रियल क्षेत्र, मैसूरु, पिन 570016, कर्नाटक, संपर्क मोबाइल सं-09482706193
2. **कामत क्लोरोटेक(कार्यालय):** # 3, 3-रा क्रास, पी.एस लाइन, कोट्टणपेट, बेंगलूरु-560053 संपर्क मोबाइल सं 09886255293, 080 41514958. ई मेल: blr.kamatchloro@gmail.com

   [फैक्ट्री]: # 256, 257, 267 & 268, तीसरा फेज, KIADB इंडस्ट्रियल क्षेत्र, मालूर, कोलार जिला, पिन: 563 160.

विषय-वस्तु :
अरुण कुमार जी.एस, रघुनाथ एम.के, बाबू लाल

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें:
निदेशक

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय
भारत सरकार, श्रीरामपुरा, मैसूर 570 008

0821-2362757,2362406

www.csrtimys.res.in

ई मेल: csrtimys.csb@nic.in

शहतूत में मूल विगलन रोग प्रबंधन

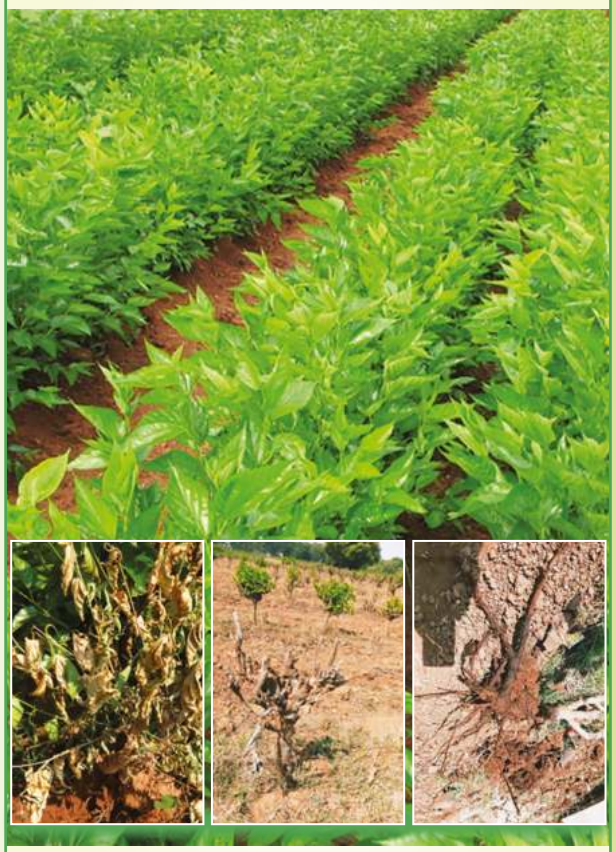

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय
भारत सरकार, मैसूरु – 570 008

Copies: 1000 February 2022

Design & Layout: J. Justin Kumar

शहतूत कृषि के लिए मूल विगलन रोग एक गंभीर समस्या है । संक्रामक होने के साथ - साथ इसमें पौधों को पूर्णत: नष्ट करने की क्षमता है । मूल विगलन रोग की अधिक तीव्रता मई एवं जून महीने के दौरान देखी जाती है । मानसून पूर्व बारिश एवं लंबे समय तक का शुष्क वातावरण इसके लिए अनुकूल है । यह भी देखा गया है कि कई रेशम कृषक मई एवं जून महीने के दौरान रोग प्रबंधन पद्धति के बारे में पूछताछ करते रहते हैं । अत: शहतूत के मूल विगलन रोग का प्रबंधन करने का पूर्वोपाय किया जाना आवश्यक है ।

लक्षण

- मूल विगलन रोग का प्रारंभिक लक्षण है - पत्तियों का पीला पड़ना और मुरझाना । बाद में शाखाएं भी मुरझाकर लटक जाती है ।
- रोगग्रस्त पौधों का मूल सड़ने के कारण उन्हें आसानी से उखाड़ा जा सकता है । रोग प्रभावित जड़ पहले भूरे रंग का और बाद में कोयला जैसा काला हो जाता है । ऊतक कमजोर होकर आसानी से गिर जाता है ।

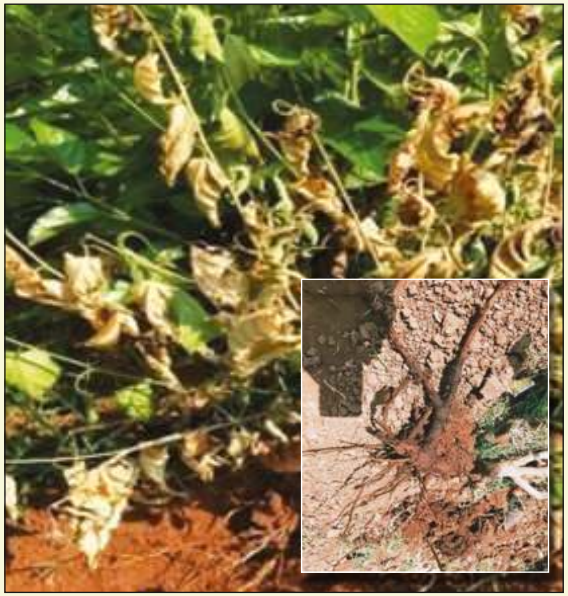

एकीकृत रोग प्रबंधन प्रणाली

अ. रासायनिक विधि

- रोग लक्षण प्रकट होने पर 30 से.मी. की ऊंचाई पर पौधों की छंटाई करें । पौधों के चारों तरफ 20-30 से.मी गहराई तक गड्ढा खोदकर 0.5% रोट-फिक्स से तनों को भिगोते हुए छिड़काव करें (5 ग्राम/लीटर जल) । गड्ढे में तुरंत मिट्टी भरकर ज़ोर से दबाएं ।
- संक्रमित पौधों के इर्द-गिर्द भी ऐसा करें ।
- पहले संक्रमित क्षेत्रों/पौधों पर 0.5% रॉट-फिक्स घोल छिड़कें ।
- यदि रॉट-फिक्स उपलब्ध नहीं है तो कार्बेनडेज़िम 12%+मैंकोज़ेब 63% का 0.2%घोल (2ग्रा/लीटर पानी) छिड़कें । यह साफ®/कंपनियन®/कंम्बि प्लस®/ कागुया® के नाम से पीड़कनाशी दुकानों पर उपलब्ध है ।

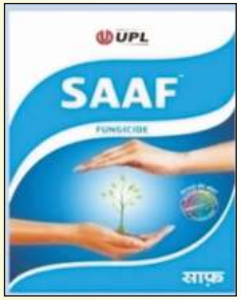

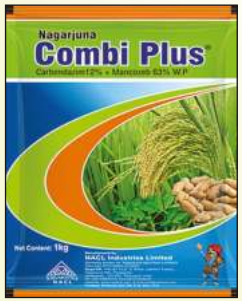

- रॉट-फिक्स छिड़कने की क्रिया विधि अपनाएं । रासायनिक अनुप्रयोग के बाद सुरक्षा अवधि 10 दिन है ।
- **नए पौधरोपण हेतु:** पौधरोपण के पहले शहतूत पौधों के जड़ को 0.1% बैवस्टिन (कार्बेनडेज़िम 50% WP) या 0.4%(4 ग्रा/ लीटर) रॉट-फिक्स घोल में डुबोकर रखें ।
- वैकल्पिक तौर पर पौधों को लगाने के पहले गड्ढों में 10 ग्राम डिथेन एम-45 (मैनकोज़ेब 75% WP) का छिड़काव किया जा सकता है ।

आ. जैविक विधि

- ट्रैकोडेर्मा हर्जियानम+गोबरखाद का अनुप्रयोग : एक कि.ग्रा टी. हर्जियानम में 50 कि. ग्राम गोबर खाद मिलाकर पर्याप्त नमी होने तक पानी छिड़कें।
- छाया में एक ढेर बनाकर उसे गीला बोरा या पौधों की पत्तियों से ढक दें । चार दिन के बाद ढेर को ठीक तरह मिलाएं और आवश्यक हो तो पानी छिड़कें ।
- 8 दिन के बाद टी. हर्जियानम के प्रगुणन से मिश्रण 1:50 अनुपात में 100 पौधों में (500 ग्रा./ पौधे) अनुप्रयोग करने के लिए तैयार हो जायेगा ।

Copies: 1000 February 2022

Design & Layout: J. Justin Kumar